143- 146

उ प सं हा र

उ प सं हा र

अमृतलाल नागर हिन्दी कथा साहित्य जगत के प्रमुख आधारस्तंभ एवं हास्य व्यंग्यकार के रुप में प्रमुख हैं । उन्होंने जीवनकोजिस रुप में देखा, सुना और पाया है उस को अपने साहित्य में स्थान दिया है । उन्होंने समाजका जो स्थित रुप है उसी रुप को उन्होंने अपने साहित्य का अंग बनाया । नागरजी मात्र एक व्यक्ति नहीं, परम्परा के सार्थवाह हैं, उसकी एक सशक्त कड़ी है, पर ऐसी जो अतीत को वर्तमान से और वर्तमान को भावी से जोडती है । उनकी कहानियों का मूल आधार मध्यवर्गीय जीवन है, किन्तु इन्होंने मुख्यतः नगरीय जीवन के सुख दुःख के सघर्ष समस्याओं सभ्यता आदि को विवेचन के लिए चुना है । नागरिक जीवन का इनका अध्ययन सूक्ष्म एवं गहरा है । उनकी कहानियाँ आधुनिक नागरिक जीवनकी प्रतिनिधि स्वरुप हैं । वाटिका कहानी संग्रहसे सन 1993 में उन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य जगत में प्रवेश किया और सन 1973 तक कुल मिलाकर तेरह कहानी संग्रहोंकी निर्मिती की है ।

अमृतलाल नागरजी ने कहानी विद्या के साथ साथ अन्य विद्याओंकासृजन भी किया है । उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, एकांकी, बालसाहित्य सब की उनकी साहित्य की निधि बन गये हैं । नागरजी स्वतंत्रता पूर्व लेखक होने के साथ कहानियां [redacted] समाजिक यथार्थ जीवन से जुडी हुई लगती हैं । मूलतः लेखक का लखनऊ केप्रति मोह था । उन्होंने लखनऊ शहरके ईर्द गिर्द लोगोंके शहरी जीवन को अपना विषय बनाया और समाज में चित्रित हर धर्मऔर रुढियों, अंधविश्वास, पारस्परिक संबन्धो का तनाव और नैसर्गिक अस्वस्थ प्रवृतियों का निराकरण हास्य

व्यंग्य से तराशे हुए कहानियों में नागरजी ने मनोविश्लेषणात्मक, हास्यव्यंग्यात्मक, ऑचलिक और सामाजिक यथार्थ परक कहानियोंका सृजन किया है । नागरजी ने हास्य व्यंग्य के युक्त कहानियोंका निर्माण किया है । 'नवाबी मसनद','हम किदाए लखनऊ' ये हास्य व्यंग्य के फूलोंका गुलदस्ता है, जो लोग इन्हें सुंघकर अपने जिंदगी के सफर में कुछ रोते हैं और कुछ हंसते भी हैं ।

नागरजी प्रेमचंद युग के कहानीकारों में से एक हैं । प्रेमचंद के साहित्य से प्रेरित होकर नागरजीने सामाजिक चिन्तक को नया आयाम देते हुए कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से युग परिवेश के मध्यें जीवन मूल्यों का पूर्ण सजगता के साथ विश्लेषण किया है । उनकी कहानियों का सृजन हिंन्दी कहानी साहित्य में एक अलग स्थान स्थापित करती है । उनकी तेरह कहानी संग्रहों में से तीन कहानी संग्रह अप्रकाशित हैं उसमें वाटिका, अवशेष, आदमी नही! नही!" आदि । उनकी प्रतिनिधि कहानी संग्रहोमें नवाबी मसनद तुला रामशास्त्री, एटम बम, पीपल की परी, कालदण्ड की चोरी, मेरी प्रिय कहानियाँ, पांचवा दस्ता और अन्य सात कहानियाँ, भारत पुत्र नौरंगीलाल, सिकंदर हार गया, हम फिदाए लखनऊ, इन कहानी संग्रहों का सृजन हुआ है ।

पहले अध्याय में मैंने नागरजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्वका समग्र वृत्तांत स्पष्ट किया है । व्यक्तित्व विश्लेषण के अंतर्गत उनका जीवन वृतांत, जन्म, बचपन, माता पिता, शिक्षा पारिवारिक जीवन संघर्षों में जीवंत योध्दा इसके साथ कृतित्व के अंतर्गत कहानी संग्रहो कें साथ साथ अन्य विधाओं से परिचित कर दिया है । उनकी विभिन्न रुचियों का विवेचन यह है कि उनके व्यक्तित्व का प्रतिफलन कृतित्व

में हुआ है । उनके प्रकृति एवं व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रतिफलन उनके साहित्य में हो गया है । महत्वाकांक्षी पैतृक प्रेरणासे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रतिफलन हुआ है और इसी महत्वकांक्षा को उन्होंने अपने जीवन की अंतिम सांस तक निभाया है । अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण साहित्य जगत में उन्होंने एक अलग स्थान निर्माण किया । नागरजी अपने लेखन में स्थान स्थानपर जीवनानुभव की अभिव्यक्ति पर बल दिया । संवेदनशील कहानीकार अपनी तस्वीर कहीं न कहीं अवश्य देख सकता है । नागर पुरातन और नूतन को समन्वय करनेवाले एवं कृतिशिल और कर्मठ कलाकार थे । उनके व्यक्तित्व और कृतित्व मे परंपरा और आधुनिकता का जीवंत समन्वय, मानव मात्र को प्रेरणा देनेवाली व्यापक राष्ट्रीयता और अखंड कर्म करने की प्रेरणा का अमूल्य संदेश प्राप्त होता है ।

दूसरे अध्याय में मैंने हिन्दी कहानी का विकास की परम्परा का विवेचन और उसमें नागरजी का प्रवेश का विश्लेषण किया है । पूर्णरुप से सर्वोपरि प्राचीन कहानियों में कुछ कमियाँ थी । उनका विकास मंद था एवं वे पूर्ण रुप से सर्वोपरि दृढ़ नहीं थीं । आज के हिन्दी कहानियों देखने से ऐसा लगता है, कि यह सभी दृष्टि से संपन्न हुई हैं । प्राचीन कहानियाँ राजनतिक, आर्थिक, सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से पंगु बन गई थीं । आगे-आगे कहानियों में विकास होता गया और प्रेमचंद युग तक ये कहानियां सभी दृष्टियोंसे दृढ़ बन गयी । हिन्दी साहित्य में कहानी विधा का स्थान पूर्ण रुपसे स्पष्ट होता गया । इसतरह प्रेमचंद युग की कहानीकारोंने महत्वपूर्ण योगदान देकर एक अलग स्थान बना लिया और आगे चलकर यह युग प्रेमचंद युग के नामसे पहचाने जाने लगा ।

अमृतलाल नागर इसी युग के कहानीकारों में से एक है । उन्होंने हिन्दी कहानी साहित्य के विकास को और भी योगदान दिया । सन 1993 में उन्होंने 'वाटिका' कहानी संग्रह लिखकर हिन्दी कहानी साहित्यमें अपने पैर जमाए ।

तीसरे अध्याय में मैने नागरजी की कहानी साहित्य में चित्रित विशेष्ताओंका विवेचन किया है । अमृतलाल नागरजी की साहित्य मध्यवर्गीय नागरी जीवन से संबंधित है । वे एक सामाजिक यथार्थवादी होने के कारण उनकी कहानियों में विविध विशेषताओंका सृजन हुआ है । लेखक मूलतः गांधीवादी एव मानवतावादी विचारधाराके पोषक होने के कारण उनकी कहानियोंपर गांधीवादी विचार का प्रभाव दिखाई पडता है । उन्होंने समाज में चित्रित अंधविश्वास रुढ़ि, अफवाहें, चापलूसी, भ्रष्टाचार, अन्याय को व्यंग्य के माध्यम से स्पष्ट किया है । साथ ही साथ स्त्री के विविध रुपोंको एक अलग ढंगके साथ स्पष्ट किया है । नागरजीने निम्नवर्ग समाजमें चित्रित लोगों की दयनीय स्थिति बेरोजगारी, एवं आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है ।

चौथे अध्याय में मैंने नागरजी की कहानियों में चित्रित समस्या.. ओंका चित्रण किया है । नागरजी ने मध्यवर्गीय समाज के गहराईयोंमें जाकर इन समस्याओंका सृजन किया । प्रेमचंद के समान उनका साहित्य सागर की तरह गहरा एवं विशाल है । मैंने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक समस्यओंको मूल रुपसे लिया है । सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत मैंने अन्य गौण समस्याओंका भी सृजन किया है। । उसमें नारी समस्या, प्रेम की समस्या, अन्धविश्वास की समस्या, निम्नवर्ग की समस्या, रंगभेद की समस्याओंको लिया है ।